ISSN 2394-5303

Issue-73, Vol-01, February 2021

Printing Area

International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

27) शाळा व्यवस्थापन समिती सदस्यांना शिक्षणाची कार्यातील सहभागाचा अभ्यास
डॉ. उपलाने मेघा महादेव & ठाकूर शिवाजी सिताराम, पुणे ||99

28) राजनीतिक परिवेश –कल भी, आज भी– अशोक वाजपेयी की कविताओं में
Asha V.S., ERNAKULAM ||105

29) कामकाजी महिलाओं का भूमिका संघर्ष (किशोरावस्था के विशेष संदर्भ में)
Prof. Manjula Alance ||109

30) कुंवरनारायण का आलोचनागत वैशिष्ट्य
डॉ. आभा सक्सेना, जावरा ||112

31) भारत में उद्यमिता के विकास में बैंकों की भूमिका
डॉ. आदित्य लूणावत, डॉ. विशाल पुरोहित & अनुराग बागेश्वर, महू ||114

32) समकालीन समाज में लोक संस्कृति, शिक्षा सातत्य एवं परिवर्तन : एक शिक्षा ...
डॉ. विजय चौहान, जिला सागर, म.प्र. ||121

33) रामायण, महाभारत एवं कृष्ण भक्तिकालीन साहित्य में वाद्यवृन्द
श्रीमती दीपा छिब्बर, चण्डीगढ़ ||128

34) लॉकडाउन अवधि के दौरान प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के प्रभाव ...
डॉ. एच. बी. गुप्ता & बलराम सिंगोतिया, जिला छिन्दवाड़ा, म.प्र. ||133

35) गांधी की जन्मभूमि गुजरात में गोदरा हिंसा, एक विश्लेषण
डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर, दौसा (राज.) ||141

36) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों की पृष्ठभूमि
प्रा.डॉ. दिलीप कोंडीबा कसबे, सांगोला ||146

37) माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा ...
मंजू बाला ||151

38) शिखर व्यंग्यकार : हरिशंकर परसाई
संतोष नागरे, जि.बीड, महाराष्ट्र ||154

39) समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श
डॉ. राम पाण्डेय, महराजगंज ||162

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

जिसमें व्यक्ति अपने भावी जीवन के लिए सही राह का चयन करता है। और उसी के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने का प्रयास करता है। अत: यह आवश्यक है कि इस अवस्था पर ही बालक की पंसद व नापसंद उसके व्यवहार तथा संवेगों का अध्ययन किया जाये। जिससे बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण कर सके तथा उसके आक्रमक व्यवहार को भी नियंत्रित किया जा सके। जीवन व्यतीत करने के लिए बालक के संवेग तथा उसका व्यवहार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: यह आवश्यक है कि वह अपने व्यवहार तथा संवेगों को सही दिशा में रखे कला वर्ग के माध्यमिक स्तरीय छात्र–छात्राओं को सही प्रकार से निर्देशित किया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. अग्रवाल जे० सी० (१९७५), एजुकेशनल रिसर्च एण्ड इन्ट्रोडक्शन, नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो।

२. भटनागर ए०बी० एवं भटनागर एम० (२००४), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।

३. चौहान, एस०एस०, (२००५) एडवान्स एजुकेशनल साइकोलॉजी नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस।

४. गुप्ता, एस०सी० (२००८), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

❑❑❑

38

शिखर व्यंग्यकार : हरिशंकर परसाई

संतोष नागरे

सहा.प्राध्यापक–हिन्दी विभाग,

र.भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई, जि.बीड, महाराष्ट्र

हास्य ईश्वर द्वारा मनुष्य को मिली सबसे बड़ी देन है। जब हम हँसते है तब हम स्वस्थ होते है। हास्य एक टॉनिक है। बदलती जीवन शैली के चलते बढ़ते तनाव को दूर करने के लिए आज हास्य क्लब खुल चुक है, साथ ही लाफ्टर शो के कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है। हास्य और व्यंग्य की आधारभूमि विसंगति है, फिर भी दोनों के बीच सूक्ष्म अंतर देखने को मिलता है। हास्य मनोरंजन के माध्यम से मन को प्रफुल्लित करता है तो व्यंग्य मन में तिलमिलाहट पैदा कर सोचने के लिए विवश करता है। हास्य का उद्देश्य मनोरंजन है तो व्यंग्य का उद्देश्य सुधार। व्यंग्यकार अपनी व्यंग्य रूपी झाड़ू के माध्यम से समाज की गंदगी को साफ करता है। हास्य का सम्बन्ध हृदय से है जबकि व्यंग्य का सम्बन्ध बुद्धि से है। हास्य बहिर्मुखी है तो व्यंग्य अंतर्मुखी। व्यंग्य में करुणा की धारा अन्तर्निहित होती है। व्यंग्य एक गंभीर एवं चुनौती भरा कार्य है। इसीलिए कहा जाता है कि साहित्य की कसौटी गद्य है, तो गद्य की कसौटी निबन्ध है। इसी तर्ज पर निबन्ध की कसौटी व्यंग्य है।

व्यंग्य के लिए अंग्रेजी में सटायर शब्द प्रयुक्त किया जाता है। जिसका अर्थ है — गड़बड़ झाला, गड़बड़ी या सम्मिश्रण। प्राचीन काल में सतुय शब्द परनिन्दा के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहा है। भारतीय साहित्य में ध्वनि, अन्योक्ति, वक्रोक्ति, विसंगति आदि के रूप में व्यंग के तत्व आरंभ से ही विद्यमान रहे है। कबीर, सूरदास, बिहारी, रहीम, घनानन्द आदि के साथ बालमुकुन्द गुप्त, बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चंद्र,

Scanned with CamScanner

कृष्णदेव प्रसाद गौड़ उर्फ बेढब बनारसी, निराला, नागार्जुन आदि की रचनाओं में हमें धारदार व्यंग्य देखने को मिलता है। लेकिन वास्तविक रूप में व्यंग्य अपने साहित्यिक रूप में हमें बाबू बालमुकुन्द गुप्त के शिव शम्भू के चिट्ठे में आकार लेता प्रतीत होता है। जिसका पूर्ण विकास भारतेन्दु के नाटकों में देखने को मिलता है१ फिर भी एक स्वतंत्र विधा के रूप में व्यंग्य स्वातंत्र्योत्तर काल में अस्तित्व में आया।

अपनी समसामयिक स्थितियों की बहुविध विसंगतियों, अन्तर्विरोधों, विकृतियों तथा मिथ्याचारों से प्रस्फुटित व्यंग्य स्वातंत्र्योत्तर साहित्य की एक गंभीर चिंतनप्रधान गद्य विधा है। सत्य, संवेदना, स्पष्टवादिता, करुणा, विडंबना, विसंगति, विदग्धता, विक्षोभ, प्रहार और सुधार की भावना व्यंग्य के प्रमुख तत्व है। इन तत्वों के ताने — बाने से बुनी गयी व्यंग्य रचना के संदर्भ में डॉ.सुरेशसिंह यादव ठीक ही कहते है, — व्यक्ति, समाज तथा विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों, पाखण्ड, भ्रष्टाचार, छल — छदम, अन्याय, अत्याचार, अनैतिक, अमानवीय, अवैज्ञानिक कार्य भावनाओं को उजागर कर गंभीरता से उसका विरोध करते हुए लोक में सत्यं, शिवम, सुन्दरम की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रतिबध्द रचना व्यंग्य है।२ स्वतंत्रता पश्चात के मोहभंग के आक्रोश से उपजे व्यंग्य की जमीन तैयार कर उसे लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवीन्द्रनाथ त्यागी इस चौकडी के साथ बरसानेलाल चतुर्वेदी, जी.पी. श्रीवास्तव, नरेन्द्र कोहली, शंकर पुणतांबेकर, सूर्यबाला, प्रेम जनमेजय आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हरिशंकर परसाई हिन्दी व्यंग्य साहित्य के मील के पत्थर माने जाते है। जिनके उल्लेख के बिना हिंदी व्यंग्य साहित्य का इतिहास अधूरा माना जाएगा। हरिशंकर परसाई स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक स्थितियों की विसंगतियों और मूल्यगत दोगलेपन के साथ है। कार्तिकुमार जैन इस संदर्भ में ठीक ही कहते है — परसाई स्वतंत्र भारत के सामाजिक अवमूल्यन, राजनीतिक क्षरण, सांस्कृतिक प्रदूषण, आर्थिक भ्रष्टाचरण और मूल्यगत दोगलेपन के साथ है।३ हरिशंकर परसाई अपनी समसामयिक स्थितियों की बहुविध विसंगतियों पर चौतरफा प्रहार करते है। निष्पक्षता, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, गहरी मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबध्दता हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य की आत्मा है। डॉ.एन.सिंह इस संदर्भ में कहते है, — वार करते हुए परसाई जी किसी को नहीं बख्शते, चाहे वह उनका मित्र या प्रशंसक ही क्यों न हो। व्यंग्यकार किसी का आदमी नहीं होता, वह सिर्फ आदमी होता है। व्यंग्य का मकसद सुधार करना होता है, आपके दृष्टिकोण को साफ दिशा की ओर मोड़ना होता है और इस लिहाज से परसाई जी का व्यंग्य बेमिसाल है, परसाई पूरे धैर्य और विश्वास के साथ आप पर चौतरफा वार करते है, उनकी हंसी के पीछे गहरी मानवीय संवेदना होती है। परसाई के व्यंग्य की यही आत्मा है।४ हरिशंकर परसाई जी के लिए व्यंग्य जीवन की समीक्षा है। मानवीय संवेदनाओं को विस्तार देते हुए समाज परिवर्तन परसाई जी के व्यंग्य का मूल उद्देश्य रहा है। अपनी रचनाधर्मिता के संदर्भ में वे स्वयं कहते है, — मैं इसलिए लिखता हूँ कि एक तो मै स्वयं को अपने समाज को और दुनिया को समझना चाहता हूँ। मै इसलिए लिखता हूँ कि व्यक्ति और समाज आत्मसाक्षात्कार और आत्मालोचना करें। अपनी कमजोरियाँ, बुराइयाँ, विसंगतियाँ, विवेकहीनता, न्यायहीनता त्यागकर जैसा वह है उससे बेहतर बने। अंधविश्वासों, झूठी मान्यताओं, अवैज्ञानिक आग्रहों और आत्मघाती रूढ़ियों से मुक्त हो। वह न्यायी, दयालु और संवेदनशील हो। ... मै समाज की बेहतरी के लिए लिखता हूँ। मै सुधार के लिए नहीं, बल्कि परिवर्तन के लिए लिखता हूँ।५

१५ अगस्त, १९४७ को देश स्वतंत्र हुआ और २६ जनवरी, १९५० को हमने गणतंत्र अपनाया। दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता का हस्तांतरण हो जाने से अंग्रेजी गोरों की जगह अपने ही कुछ काले कई सालों से जनतंत्र की स्वादिष्ट सब्जी खा रहे है। जनतंत्र की सब्जी जन के छिलके पर आदर्शों का मसाला, कागजी कार्यक्रमों का नामक डालकर तन्त्र की आग में पकाकर नौकरशाही के चम्मच से खायी जाती है। स्वतंत्रता के

Scanned with CamScanner

बाद इस देश में चमचों की एक नयी संस्कृति विकसित हुई। जिससे कई परिपक्व नेता उभरकर सामने आये। सौभाग्य से इस देश का प्रजातंत्र इन्हीं चमचों की बुनियाद पर टिका है। चमचे की दिल्ली यात्रा में हरिशंकर परसाई कहते है, — भारतीय प्रजातंत्र का यह सौभाग्य है कि यहाँ स्वतंत्रता के बाद बहुत जल्दी काफी संख्या में चमचे बन गए।... एशिया और अफ्रिका के नये स्वतंत्र जिन देशों में आजादी की लड़ाई के दौर में चमचों का निर्माण इस तरह नहीं हुआ था, वहाँ प्रजातंत्र नहीं टिक सका। चाहे साम्राज्यवाद हो, चाहे प्रजातंत्र दोनों चमचों की बुनियाद पर खड़े रहते हैं।[६] चमचों के साथ जादूगर तथा साधुओं की भी इस देश के प्रजातंत्र की बुनियाद रखने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राजनीतिक स्कूटर पर सवार आँखों पर पट्टी बाँधे जादूगर समाजवाद, खुशहाली, गरीबी हटाओ तथा अच्छे दिन के स्वप्न दिखाकर जनता को गुमराह कर रहे है। आजादी के इन ७० वर्षों में समयानुसार जादूगर बदलते रहे पर खेल अब भी जारी है। जादूगर अपना खेल दिखा रहे है और अंधी जनता उसे देख रही है। जादूगर के साथ साधुओं की भी इस देश में बाढ़ आयी है। धर्म का चोला पहने साधुओं ने राजनेताओं से साँठ—गाँठ कर अपनी दुकानदारी शुरू की है। जो अन्न को नहीं आनंद को ही ब्रह्म मानकर जनता को धर्म की भूलभूलैया में भटका रही है। मनुष्य को ब्रह्म की तरफ ले जाकर ये अपनी माया का साम्राज्य बढ़ा रहे है। हरिशंकर परसाई भारत को चाहिए : जादूगर और साधु में इनकी पोल खोलते है, — साधु का यही कर्म है कि मनुष्य को ब्रह्म की तरफ ले जाए और पैसे इकट्ठे करे, क्योंकि ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।... जादूगर और साधु। ये इस देश की जनता को कई शताब्दी तक प्रसन्न रखेंगे और ईश्वर के पास पहुँचा देंगे।[७] जादूगरों तथा साधुओं की साँठ—गाँठ के चलते इस देश की जनता कई बार ठगी जाती है। धार्मिक उन्माद पैदा कर जनता को आपस में लड़वाना, अंधविश्वास फैलाकर लोगों को अज्ञानी एवं क्रूर बनाना राजसत्ता, धर्मसत्ता का पुराना हथकण्डा रहा है। जिसका आज भी पूरी ईमानदारी के साथ निर्वहन किया जा रहा है। विविधता में एकता इस देश की संस्कृति का मूलाधार है। दुर्भाग्य से चुनाव के समय धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता, जाति, सम्प्रदाय आदि के आधार पर जनता को आपस में लड़वाकर देश की एकता एवं अखंडता को तोड़ने की कोशिश की जाती है। इस देश में बढ़ते दंगों से नष्ट होते सामाजिक स्वास्थ पर प्रहार करते हरिशंकर परसाई कहते है, — दंगे से अच्छा गृह — उद्योग तो इस देश में दूसरा है नहीं।[८]

आजादी के पश्चात बढ़ती अवसरवादिता, भाई—भतीजावाद, नैतिक मूल्यों का पतन, दलबदल वृत्ति से निर्मित आयाराम—गयाराम संस्कृति, योग्यता की अपेक्षा लोकप्रियता को दी जानेवाली अहमियत, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार तथा चरित्रहीनता के चलते जनता को अनिश्चय एवं अविश्वास के सिवा कुछ नहीं मिला। हरिशंकर परसाई कहते है, — जिस रास्ते पर हम चल रहे है वह समाजवाद मार्ग है, पर ले कहीं ओर जा रहा है। महात्मा गांधी मार्ग पर सारे ठग रहते है। रवीन्द्र मार्ग पर बूचड़खाना खुला है। परीक्षा में कोई बैठता है और पास दूसरा हो जाता है। सारे देश में शक्कर के दाम दो रुपये किलो निश्चित किए गये है, पर इस घोषणा के बाद ही उसका दाम चार रुपये से बढ़कर सवाचार रुपये हो जाता है। सहकारी दुकान के सामने कतार लगी है और पीछे के दरवाजे से चीजें कालाबाजार में जा रही है। खेत में काम कोई करता है टिकिट दूसरे को मिल जाती है। हम किसी को महान भ्रष्टाचारी घोषित करते है और वह सदाचार— अधिकारी बना दिया जाता है। अनिश्चय और अविश्वास।[९] आर्थिक — सामाजिक विषमता, बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण से उजड़ते गाँव, किसानों की आत्महत्या, अपराध जगत का विस्तार, पर्यावरण, शिक्षा तथा रोजगार से सम्बन्धित कई समस्याएं इस देश में है। जिसे सुलझाने की अपेक्षा उसे उलझाए रखने के लिए सरकार जाँच कमीशन बिठाती है। जो सरकार का कुल्हा ही है। हरिशंकर परसाई कहते है, — जब समस्या हल न करनी हो, या वह हल न होती हो तो कमीशन बिठा दो।[१०] समस्याओं के हलाहल से हलाल हुए लेकिन विश्वास एवं उम्मीद से भरे सर्वहारा वर्ग के ठिठुरते हुए हाथों की तालियों पर ही इस देश का गणतंत्र टिका हुआ है। हरिशंकर परसाई

ठिठुरता हुआ गणतन्त्र में कहते है, — स्वतंत्रता दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है।... गणतंत्र ठिठुरते हुए हाथों की तालियों पर टिका है। गणतंत्र को उन्हीं हाथों की तालियाँ मिलती है, जिनके मालिक के पास हाथ छिपाने के लिए गर्म कपड़ा नहीं है।१ आम आदमी भीगते एवं ठिठुरते हुए भी तालियाँ बजा रहा है तो खास आदमी अपने हाथ सेंकने में लगा हुआ है। भ्रष्टाचार इसी का नतीजा है। खाने और खिलाने की प्रवृत्ति ने भ्रष्टाचार को जन्म दिया। लालफीताशाही के चलते सोर्सप्रेमी जातियों ने उसे गली से लेकर दिल्ली तक फैलाते हुए एक मूल्य के रूप में स्थापित किया। जहाँ बड़ा भ्रष्टाचार कर खपस आदमी सम्मान का पात्र बनता है वहीं आम आदमी सजा का। भ्रष्टाचार की इन विसंगतियों को साहब महत्वकांक्षी में बेनकाब करते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, — बड़े भ्रष्टाचारी को बाइज्जत अलग कर देने की विधि कम्पलसरी रिटायरमेंट कहते है। चपरासी या बाबू का भ्रष्टाचार पकड़ा जाय, तो वह डिसमिस होता है। जेल भी भेजा जा सकता है क्योंकि वह सिर्फ ५ —१० रुपये खाता है, मगर बड़ा अफसर ५—१० लाख दबा लेता है और सरकार उस पर ध्यान देने के लिए मजबूर हो जाती है, तब उससे हाथ जोड़कर कहती है हुजूर आशा है, आप अब तक काफी खा चुके है। अब अगर आप उचित समझें तो बाकी जिन्दगी चैन से गुजारें।२ दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के पश्चात भ्रष्टाचार कर चैन की जिन्दगी गुजारनेवाला और ईमानदारी के चलते दर — दर की ठोकरें खाने के लिए विवश वर्ग भी इस देश में पाया जाता है।

हरिशंकर परसाई जी ने राष्ट्रीय राजनीति के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति की विसंगतियों को बेनकाब किया। मजहबी उम्माद के माध्यम से विश्व को इस्लाम और ईसाई इन दो धर्मों के बीच बाँटने की राजनीति करनेवाले यह भूल जाते है कि इस्लाम के तेल के बिना अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के चर्च में रोशनी नहीं हो सकती। अमेरिका के लिए दुनिया में सबसे पवित्र कार्य है अपने हीतों की रक्षा। अपने हीतों की रक्षा के अतिरिक्त अमेरिका की कोई नीति नहीं। महासत्ता बनी रहने के लिए अमेरिका विश्व में अराजकता फैलाकर अमानवीयता की सारी सीमाएँ लाँघ रहा है। मानव आत्मा और अमेरिकी छूटर में खतरे से घिरे अमेरिकी शासकों पर प्रहार करते हरिशंकर परसाई कहते है, — ऐसी कौन सी बात है जिससे अमेरिकी हीत खतरे में न पड़ते हो। किसी देश में आर्थिक — सामाजिक सुधार होने लगे तो अमेरिकी हीतों को खतरा पैदा हो जाता है। राष्ट्रों की स्वाधीनता अमेरिकी हीतों को खतरा। विकास करता देश भी खतरा। अगर कोई सरकार प्रगतिशील है, तो खतरा। कोई देश शांति से रहना चाहता है तो वह भी अमेरिकी हितों को खतरा पैदा करता है। किसी देश में लोकतन्त्र हो तो वह भी खतरा। किसी देश में लोकप्रिय नेतृत्व भी खतरा। कोई देश आत्मनिर्भर होने लगे, तो खतरा। कोई देश अपनी नीतियाँ खुद तय करे तो खतरा। रूस से किसी देश के अच्छे सम्बन्ध हो तो भी अमेरिकी हीतों को खतरा। खतरे — ही — खतरे है। किसी भी दयालु आदमी को दया आएगी अमेरिकी शासकों पर। बेचारे, भले, मानवतावादी, परोपकारी, न्यायी लोग कितने खतरों से घिरे रहते है।३

भारत कृषिप्रधान देश है। जो आज अपनी पहचान खोकर धीरे—धीरे उद्योग — प्रधान होते जा रहा है। बढ़ते उद्योग एवं नागरिकरण से हुआ भौतिक विकास हमें प्रकृति एवं पर्यावरणीय विनाश की ओर लेकर जा रहा है। ऋतु परिवर्तन से कृषि व्यवस्था चौपट हो जाने से किसानों की आत्महत्याएँ बढ़ रही है। कृषिप्रधान भारत की बदली हुई तस्वीर के परिप्रेक्ष्य में सुजलां सुफलां में बंकिमचन्द्र से सवाल करते हरिशंकर परसाई कहते है, — बंकिमचंद्र होते, तो मैं उनसे पूछता कि क्या यह तुम्हारी सुजलां सुफलां मलयज शीतलां शस्य श्यामलां मातृभूमि है? सुजलां! वाह, सावन का महिना सूखा जा रहा है और बंकिम कहते है सुजलां। और सुफलां कहाँ है? किसी के अमरूद को हाथ तो लगा लो। सवा रुपये सेर के आम किसानों के लिए सुफल है? और मलयजशीतलां? इधर बायें तरफ से कारपोरेशन की नाली की दुर्गन्ध आ रही है और सामने से खुली हवा के पखाने की। शस्य राशि कहाँ है? दूसरे देशों से अन्न उधार लेकर इस स्वर्ग — भूमि के चालीस करोड़ देवता पेट भर रहे है।

Scanned with CamScanner

गाँवो मे मनुष्य पशुओं का हिस्सा छीनकर खा रहे है। और बंकिम को शस्य श्यामला दिख रहा है[६४]

आजादी के सत्तर साल बाद भी इस देश की पुलिस एवं न्यायव्यवस्था अपनी विश्वसनीयता और विश्वासार्हता बनाने मे असफल रही है। आपसी हितसंबंध तथा भ्रष्टाचार के चलते वह अपराधी को छोड़कर निरपराधि को सताने मे लगी हुई है। आजादी के पूर्व गाली–गलोच, मारपीट तथा लूट के चलते पुलिस के प्रति जनता के मन मे जो दहशत थी वह आज भी ज्यो – की–त्यो है। हरिशंकर परसाई रामसिंह की ट्रेनिंग मे इसकी पोल खोलते हुए कहते है, – पुलिस अफसरों को देखते मुझे वर्षों हो गये। किसी ने मुझे क्यो बे बुड्ढे के सिवा कुछ और नही कहा। मुझे तो तभी शक हो गया था, जब तूने आदर से मुझे 'बाबा' कहा था। फिर तूने दूध पीने से इनकार किया। ऐसा कोई अफसर नही करता। फिर तूने रुपये नही लिये। ऐसा भी कोई अफसर करता है? अरे, हम तो डर के मारे चोरी की रिपोर्ट नही करते कि पुलिसवाले आयेंगे और हर आना वसूल करके सरकार मे जमा करेंगे। और तू कहता है कि मै एक पैसा नही लूँगा और चोरी का पता लगाऊँगा। ऐसा अफसर तो मैने आज तक नहीं देखा। तू तो कोई ठग है। पर बेटा स्वाँग पूरा नही रच पाये और पकड़े गये। अब सच्चे पुलिस अफसर आते है जो तुझे दस पाँच साल जेल मे सड़ायेंगे[६५] जो स्थिति पुलिसव्यवस्था की है लगभग वही न्यायव्यवस्था की भी रही है। ईश्वर को साक्षी मानते हुए जितना झूठ अदालत मे बोला जाता है उतना अन्य कही नही। वकीलों व्दारा अदालत में झूठ को बढ़िय्या कपड़े पहनाकर सत्य साबित करने का खेल खेला जाता है और आँखो पर पट्टी बाँधे न्यायदेवता उसे देखती रहती है। आम आदमी को तारीखवे मे उलझाए रखनेवाली न्यायव्यवस्था की पोल खोलते हुए हरिशंकर परसाई न्याय का दरवाजा मे स्पष्ट कहते है, – महज दरवाजा खटखटाने से जो मिलता है, वह अक्सर अन्याय होता है। दरवाजा तोड़े बिना न्याय नही मिलता[६६]

न्यायव्यवस्था की तरह स्वास्थ सेवाओं की भी यहाँ दुरावस्था है। स्वास्थ सेवाओ के अभाव मे कई लोग असमय ही इस संसार से विदा लेते है। हमारे यहाँ के अस्पताल लूट के केंद्र है तो डॉक्टर मुनिस्टाना। जो रोग को दूर करने की अपेक्षा रोगी को ही मुक्त करने पर तुले हुए है। रामभरोसे का इलाज मे इसे बेनकाब करते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, – बिगड़ना भी तो सुधार है। जैसी हालत मे आया था, वैसा तो नही है। यही सुधार है।... पर यह सुधार तो मौत की तरफ जा रहा है। डॉक्टर दार्शनिक हो गया। बोला मौत तो जीवधारी का सबसे बड़ा सत्य है। देह नाशवान है। आत्मा अमर है। आत्मा को टाइफाइड नही होता। अगर यह शुध्द आत्मा हो जाएगा, तो कभी इसे रोग नही होगा[६७]

किसी भी देश के विकास मे यहाँ की शिक्षाव्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ शिक्षा की दुरावस्था है। बच्चो की शिक्षा के माध्यम से देश का भविष्य गढ़नेवाले अध्यापक खस्ता हालत मे जीवन जीने के लिए विवश है। एक तृप्त आदमी में मास्टर नन्दलाल शर्मा के अभावग्रस्त जीवन का यथार्थ चित्रण है। अभावग्रस्तता के मौसम ने मास्टर नन्दलाल शर्मा को पूर्ण तृप्त आदमी बना दिया है। हरिशंकर परसाई कहते है, – ऐसा आदमी दुर्लभ है। दुनिया मे निराशा, विकलता, पिपासा और क्षुधा के पुतले ही देखने मे आते है। तृप्त आदमी आउट ऑफ स्टॉक होता जाता है। एन.एल.मास्टर झरना है रेगिस्तान का। उसे देखने से ऐसा लगता है कि जैसे तीर्थ स्नान कर लिया हो। वह पूर्ण तृप्त आदमी है। उसे कोई भूख नही है[६८] जो स्थिति अध्यापको की है उससे विपरीत विश्वविद्यालयो के डॉक्टरो की है। जिनके शोध – निर्देशन मे शोध–कार्य संपन्न किया जाता है। अपने शोध – छात्र रॉबर्ट मोहन को शोध के नियम और उसके प्रयोजन के बारे मे समझाते हुए डॉ. बीनसनन्दन इति श्री रिसर्चाय मे कहते है, – रॉबर्ट, तुम्हें शोध का सबसे पहला नियम नही आता। अरे जो प्राचीन है वह सब से उत्तम है। युग केवल वर्तमान है। और शोध का प्रयोजन ही यह है कि जिस मे जो चीज न हो उसे खोजा जाये। इन पंक्तियो मे काव्य –गुण नही है जो तुम्हे अपनी ओर से आरोपित करना होगा। महाकवि था। कोई हंसी – खेल नही है[६९] इस क्रांतिकारी

Scanned with CamScanner

खोज से डॉक्टर बने रॉबर्ट मोहन समाज की शोभा बढ़ा रहे है। शोधकार्य मे आचार्य की कृपा अध्ययन और ज्ञान से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है। आचार्यों की कृपा से फले–फूले शोध के वटवृक्ष के संदर्भ मे हरिशंकर परसाई कहते है, — डॉक्टरेट अध्ययन और ज्ञान से नहीं, आचार्य —कृपा से मिलती है। आचार्यों की कृपा से इतने डॉक्टर हो गये है कि बच्चे खेल–खेल मे पत्थर फेंकते है तो किसी डॉक्टर को लगता है। एक बार चौराहे पर यहाँ पथराव हो गया। पाँच घायल अस्पताल मे भर्ती हुए और वे पाँचो हिन्दी के डॉक्टर थे। नर्स अपने अस्पताल के डॉक्टर को पुकारती : डॉक्टर साहब, तो बोल पड़ते थे ये हिन्दी के डॉक्टर।२० हमारे यहाँ के विश्वविद्यालयों की बिना इम्तहान पास किये बड़े लोगों को ससम्मान डॉक्टरेट प्रदान करने की स्वस्थ परम्परा रही है। यही स्थिति अगर बनी रही तो भविष्य मे डॉक्टर बनने का सबका सपना जरूर पूर्ण होगा। एक दीक्षांत भाषण मे हरिशंकर परसाई कहते है, — तरुण मित्रो, आपको यह विदित ही है कि समारोह मे मुझे भी आपके साथ कानून की डॉक्टरेट बिना किसी इम्तहान के पास किए ससम्मान मिल रही है। यह बड़ी स्वस्थ परम्परा है कि जो परीक्षा पास न करे उसे सम्मानपूर्वक डिग्री मिल जाए।... डॉक्टर बनने की इच्छा मेरी बचपन से ही थी, पर अकल ने साथ नहीं दिया। यह इच्छा आज पूरी हो रही है। मै जानता हूँ कि यदि मै मंत्री न होता तो कानूनी डॉक्टर क्या, कम्पाण्डर भी मुझे कोई न बनाता।२१ पाठ्यक्रम केंद्रित हमारी शिक्षाव्यवस्था हमें डिग्री तो दे देती है पर जीवन जीने की दृष्टि नहीं दे पाती । अत: जीवन से कट जाने के कारण दृष्टिहीन हुई पीढ़ी आगामी पीढ़ी के ऊपर लद जाती है। जिससे आँखवालों की जवानी इन अंधों को ढोने और उनके द्वारा बनाये गये रास्ते पर चलने मे ही गुजर जाती है। राजनीति, साहित्य, कला, धर्म, शिक्षा क्षेत्र मे कई कॉवड़े है। जिनमे बैठे नए अंधो के तीर्थ है— कैबिनेट, मंत्रिमंडल, अकादमी, विश्वविद्यालय। हरिशंकर परसाई कलो श्रवणकुमार के मे इसकी पोल खोलते हुए कहते है, — कितनी कॉवड़े है राजनीति मे, साहित्य मे, कला मे, धर्म मे, शिक्षा मे। अंधे बैठे है और आँख वाले उन्हें ढो रहे है। अंधे मे अजब काँइयाँपन आ जाता है। वह खरे और खोटे सिक्के को पहचान लेता है। पैसे सही गिन लेता है। उसमे टटोलने की क्षमता आ जाती है। वह पद टटोल लेता है, पुरस्कार टटोल लेता है, सम्मान के रास्ते टटोल लेता है। बैंक का चेक टटोल लेता है। आँख वाले जिन्हें नहीं देख पाते, उन्हें वह टटोल लेता है। नए अन्धो के तीर्थ भी नए है। वे काशी, हरिद्वार, पुरी नहीं जाते। इस काँवड़वाले अन्धे से पूछे — कहाँ ले चले ? वह कहेगा — तीर्थ ! कौन — सा तीर्थ ? जवाब देगा— कैबिनेट! मन्त्रिमण्डल। उस काँवड़वाले से पूछे, तो वह भी तीर्थ जाने को प्रस्तुत है। कौन — सा तीर्थ चलेंगे आप ? जवाब मिलेगा— अकादमी, विश्वविद्यालय।२२

शिक्षा के साथ साहित्य जगत की विसंगतियों को हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद के फटे जूते, मुक्तिबोध: एक संस्मरण, लेखक : संरक्षण, समर्थन और असहमति तथा कर कमल हो गये मे बेनकाब किया है। शोषणकारी व्यवस्था के टीले को ठोकर मार–मारकर प्रेमचन्द ने अपना जूता फाड़ लिया पर समझौता कर अपना रास्ता नहीं बदला। अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठानेवाले मुक्तिबोध मरे पर हारे नहीं। दुर्भाग्य से संसदीय लोकतंत्र के लेखक व्यवस्था से समझौता कर अपने जूते बचाए रखने मे लगे हुए है। प्रेमचंद के फटे जूते मे इसकी पोल खोलते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, — तुम मुझ पर या हम सभी पर हँस रहे हो, उन पर जो अँगुली छिपाए और तलुआ घिसाए चल रहे हो, उन पर जो टीले को बरकाकर बाजू से निकल रहे है। तुम कह रहे हो — मैंने तो ठोकर मार–मारकर जूता फाड़ लिया, अँगुली बाहर निकल आई, पर पाँव बच रहा और मै चलता रहा, मगर तुम अँगुली को ढाँकने की चिन्ता मे तलुवे का नाश कर रहे हो। तुम चलोगे कैसे?२३ व्यवस्था की हाँ–में — हाँ मिलाते हुए आज बाजार के अनुरूप साहित्य लिखा जा रहा है। नंगेपन का पेटेंट अच्छा होने से साहित्य मे नग्नता को एक बाजार मूल्य के रूप मे स्थापित किया जा रहा है। बाजार संस्कृति का एक ही मूल्य है लूट । इस लूट के लिए वह विज्ञापन का सहारा लेती है। विज्ञापन अपनी फूहड़, अश्लील, गन्दी सम्पन्नता को प्रदर्शित कर

Scanned with CamScanner

ईमानदारी की जिन्दगी जीनेवालों की विपन्नता का मजाक उड़ाते है। मनुष्य को उपभोक्तावादी बनानेवाली इस संस्कृति की मूल्यहीनता तथा अमानवीयता पर प्रहार करते हुए हरिशंकर परसाई लुध्यन की भीड़ में कहते है, — बुध्दि, विद्या, चरित्र का अवमूल्यन हो गया है। इनसे कोई मतलब नहीं। वे विज्ञापन में दिखाते है — मूर्खतापूर्ण सौन्दर्य या सौन्दर्यमयी मूर्खता। समझदार लड़कियाँ अच्छे कपड़ों में सजी हुई बेवकूफी पर मर मिटती है। सवाल है कि इस पूरे माहौल में बुध्दिमान, चरित्रवान मगर मामूली कपड़े पहननेवाले युवक की क्या नियति है? ... ये कपड़े ५ या ७ प्रतिशत के लिए बनते है, ५०—६० प्रतिशत का शोषण करते है। ये विज्ञापन सही अर्थ में अश्लील होते है। पर हम विवश है, इसे बड़ी शान से उपभोक्ता संस्कृति कहते है। हम उत्पादक के लिए मनुष्य नहीं, उपभोक्ता है। हमारा कुल इतना उपयोग है कि हम खरीददार बने रहें।२४ फिल्मी कलाकार, प्रसिध्द खिलाड़ी विश्वसुंदरी विज्ञापन करने लगे तो समझ में आ सकता है पर देश के सांसद, लेफ्टिनेण्ट जनरल जैसे पदों पर बैठे जिम्मेदार लोग भी व्यापार के पक्ष में शामिल होने लगे, इससे शर्मनाक बात और क्या हो सकती है। विज्ञापन संस्कृति की विकृति को बेनकाब करते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, — अगर बड़े—बड़े लोग जिनकी अपने क्षेत्र में सेवाओं से ख्याति है इस तरह विज्ञापन के लिए अपने को बेचने लगे तो क्या होगा? इसका कोई अन्त नहीं।२५ बाजार की विज्ञापन संस्कृति में मनुष्य शोभा बढ़ाने के लिए जितना तत्पर दिखाई देता है, उतना काम के लिए नहीं। जो जितना सभ्य है वह उतनी ही शोभा साधने की फिक्र में लगा रहता है। विवाह, वन महोत्सव, दान—धर्म, श्रमदान के साथ अंतयात्रा के सुअवसर पर भी शोभा साधनेवाले अपने कार्य में जी—जान से लगे हुए दिखाई देते है। कपड़े पर रंग चढ़ाने के बदले रंग पर कपड़ा चढ़ानेवालों की पोल खोलते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, — काम और शोभा का संबंध कपड़े और रंग का है। हम कपड़े पर रंग चढ़ाने के बदले, रंग पर कपड़ा चढ़ाने के प्रयास में है। यह नहीं होना, इसलिए कुण्डों में रंग घोले बैठे है और कपड़े के अभाव में नंगे होते जा रहे है। नंगे आदमी के पास रंग का कुण्ड? क्या बात है इस शोभा की।२६ विज्ञापन में नारी वस्तु के रूप में बिक रही है। प्रेम और सौंदर्य का नाम लेकर मुनाफाखोर कम्पनियों ने शाश्वत मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन किया है। अर्थप्रधान इस उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य संवेदनाहीन होता जा रहा है। ममता, सहानुभूति, करुणा, परोपकार, मानवीयता जैसे मूल्यों की उपेक्षा की जा रही है। सभ्यता का अमानवीयकरण करके उसे आधुनिक श्रृंगार के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। अमानवीयता की इस आधुनिक फैशन पर प्रहार करते हुए हरिशंकर परसाई कहते है, — जो अपने को मरा हुआ नहीं समझता, वह आधुनिक नहीं है। .... क्योंकि मरण — कल्पना तो आधुनिक फैशन ही है। अब तो ममता, सहानुभूति और करुणा मन में पीड़ा होती है, तब भी शंका होती है कि कहीं यह पोंगापन तो नहीं है। अमानवीयता भी तो आधुनिक फैशन है।२७

मानवीय मूल्यों के पतन से सामाजिक स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है। अपने समसामयिक दौर में बढ़ती अश्रध्दा और विश्वासहीनता से हरिशंकर परसाई दुखी है। अतः मौसम परिवर्तन के लिए अपने श्रध्दालुओं को क्रांतिकारी बनने की सलाह देते हुए कहते है — श्रध्दा पुराने की अखबार की तरह रद्दी में बिक रही है। विश्वास की फसल को तुषार मार गया। इतिहास में शायद कभी किसी जाति को इस तरह श्रध्दा और विश्वास से हीन नहीं किया गया होगा। जिस नेतृत्व पर श्रध्दा थी, उसे नंगा किया जा रहा है। जो नया नेतृत्व आया है, वह उतावली में अपने कपड़े खुद उतार रहा है। कुछ नेता तो अण्डरवियर में ही है। कानून से विश्वास गया। अदालत से विश्वास छीन लिया गया। बुध्दिजीवियों की नस्ल पर ही शंका की जा रही है। डॉक्टरों को बीमारी पैदा करनेवाला सिध्द किया जा रहा है। कहीं कोई श्रध्दा नहीं, विश्वास नहीं। अपने श्रध्दालुओं से कहना चाहता हूँ — यह मरण छूने का मौसम नहीं, लात मारने का मौसम है। आगे एक लात और क्रांतिकारी बन जाओ।२८

सारांश :—

अपनी समसामयिक स्थितियों की बहुविध विसंगतियों, अन्तर्विरोधों, विकृतियों तथा मिथ्याचारों से

Scanned with CamScanner

प्रस्फुटित व्यंग्य स्वातंत्र्योत्तर साहित्य को एक गंभीर चिंतनप्रधान गद्य विधा है। स्वतंत्रता के पश्चात मोहभंग के आक्रोश से उपजे व्यंग्य की जमीन तैयार कर उसे लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने में जिन व्यंग्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है, उनमें हरिशंकर परसाई सर्वश्रेष्ठ है। उनके नामोल्लेख के बिना हिंदी व्यंग्य साहित्य का इतिहास अपूर्ण माना जाएगा। हरिशंकर परसाई अपने व्यंग्य के माध्यम से जीवन की बहुविध विसंगतियों पर चौतरफा प्रहार करते है। निष्पक्षता, निर्भीकता, गहरी मानवीय संवेदना, सामाजिक प्रतिबध्दता तथा सामाजिक परिवर्तन की कामना हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य साहित्य की आत्मा है।

आजादी से लेकर आज तक इस देश की जनता हर चुनाव में जनतंत्र के जादुगरों एवं साधुओं द्वारा निरंतर ठगी जाती रही है। राजनीति में बढ़ती अवसरवादिता, भाई–भतीजावाद, दलबदल वृत्ति से निर्मित आयाराम — गयाराम संस्कृति, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, धार्मिक उन्माद, जातियता, भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी, महँगाई, बेरोजगारी, लालफीतशाही में दम तोड़ती योजनाएँ, आम आदमी की अभावग्रस्तता, आर्थिक — सामाजिक विषमता, कृषिप्रधान देश में बढ़ती किसानों की आत्महत्याएँ, भ्रष्ट पुलिस एवं न्यायव्यवस्था, स्वास्थ सेवाओं की दुरवस्था, आत्मकेंद्रित बुध्दिजीवी वर्ग की चापलूसी, बाजारू उपभोक्तावादी संस्कृति में दम तोड़ते मूल्य, महानगरीय सभ्यता की अमानवीयता, शिक्षा, साहित्य एवं अनुसंधान जगत का नष्ट–भ्रष्ट होता चारित्र्य, विकास के नाम पर किया जानेवाला विनाश तथा मानवीय मूल्यों के पतन से नष्ट होते सामाजिक स्वास्थ्य का यथार्थ चित्रण हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य साहित्य में हमें देखने को मिलता है। समाज की बेहतरी एवं खुशहाली के लिए हरिशंकर परसाई व्यंग्य को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हुए शोषणकारी व्यवस्था के विरुध्द आवाज उठाते है। यह आवाज ही हरिशंकर परसाई जी को शिखर व्यंग्यकार बनाती है। अंत में दुष्यंतकुमार के शब्दो में सिर्फ इतना ही कह सकते है, —

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तेरे सीने में सही
हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

संदर्भ :–

१) डॉ.एन.सिंह, विचार यात्रा में, पृ.४२

२) डॉ. सुरेशसिंह यादव, हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य के रंग, पृ.२०

३) चयन एवं संपादन, शकिल कुमार मेहेर, समय संस्मरणों में (चर्चित संस्मरणों का विशिष्ट संग्रह), पृ.२६५

४) डॉ. एन. सिंह, विचार यात्रा में, पृ.४९

५) डॉ. सुरेशसिंह यादव, हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य के रंग, पृ.२७

६) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा, पृ.६७

७) संपा. निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया : हरिशंकर परसाई, पृ.४८

८) वही, पृ.२३

९) वही, पृ. १४७–१४८

१०) वही, पृ.४९

११) वही, पृ.२२

१२) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा पृ.३३

१३) संपा.निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया :हरिशंकर परसाई, पृ.४२ — ४३

१४) वही, पृ.७७–७८

१५) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा, पृ.६४–६५

१६) संपा. निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया : हरिशंकर परसाई, पृ.७०

१७) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा, पृ.५८–५९

१८) वही, पृ.२९

१९) हरिशंकर परसाई, जैसे उनके दिन फिरे, पृ.१५–१६

२०) संपा. निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया : हरिशंकर परसाई, पृ.५१

२१) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा, पृ.४६–४७

२२) संपा. निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया : हरिशंकर परसाई, पृ.९०

२३) वही, पृ.१३१

२४) वही, पृ.११८–११९

२५) वही, पृ.१२२

२६) वही, पृ.१२६

२७) हरिशंकर परसाई, काग भगोड़ा, पृ. ९४–९६

२८) संपा. निर्मला जैन, निबन्धों की दुनिया : हरिशंकर परसाई, पृ.५३–५४

Scanned with CamScanner